उत्पत्ति से प्रकाशितवाक्य तक पिता परमेश्वर की हृदय से पुकार...

पिता का प्रेम पत्र

मेरे बच्चे...

तुम मुझे नहीं पहचानते हो,
पर मैं तुम्हारे बारे में सब जानता हूँ...भज 139:1 मैं तुम्हारा उठना बैठना जानता हूँ...भज 139:2 मैं तुम्हारे हर रास्ते से परिचित हूँ...भज 139:3 तुम्हारे सिर के सारे बाल गिने हुए हैं...मत 10:29–31 क्योंकि तुम मेरे स्वरूप में बनाये गये थे...उत 1:27 तुम मुझमें जीवित हो, चलते फिरते हो और अपना अस्तित्व रखते हो...प्रे 17:28 क्योंकि तुम मेरी सन्तान हो...प्रे 17:28 गर्भ में तुम्हारी रचना करने से पूर्व मैं तुम्हें जानता था...यिर्म 1:4–5 जब मैंने सृष्टि की योजना बनाई उस समय तुम्हारा चुनाव किया...इफ 1:11–12 तुम्हारा अस्तित्व में आना कोई दुर्घटना नहीं है...भज 139:15–16 क्योंकि तुम्हारे सारे दिन मेरी किताब में लिखे हुए हैं...भज 139:15–16 मैंने तुम्हारे जन्म का निश्चित समय ठहराया और यह भी कि तुम कहाँ रहोगे...प्रे 17:26 तुम्हारी रचना गंभीर व अद्भुत है...भज 139:14 तुम्हारी माँ के गर्भ में मैंने तुम्हारे भीतरी अंगों का निर्माण किया...भज 139:13 और तुम्हारे जन्म दिवस पर मैं तुम्हें दुनिया में लाया...भज 71:6 वे जो मुझे नहीं पहचानते हैं उन्होंने मुझे गलत प्रस्तुत किया है...यूह 8:41–44 मैं तुम से दूर या क्रोधित नहीं हूँ पर मैं स्वयं प्रेम का सम्पूर्ण स्वरूप हूँ...1यूह 4:16 और यह मेरी इच्छा है कि मैं अपने प्रेम को तुम पर उण्डेल दूँ...1यूह 3:1 और यह सिर्फ इसलिए कि तुम मेरे बच्चे हो और मैं तुम्हारा पिता हूँ...1यूह 3:1 मैं संसारिक पिता से भी कहीं अधिक तुम्हें देना चाहता हूँ...मत 7:11 इसलिए कि मैं सर्वसिद्ध पिता हूँ...मत 5:48 हर एक अच्छा दान जो तुम्हें मिलता है वह मेरे हाथों ही से आता है...याक 1:17 क्योंकि मैं तम्हारी आवश्यकताओं का पूरक हूँ और तुम्हारी हर घटी को दूर करता हूँ...मत 6:31–33 मेरी योजना तुम्हारे भविष्य के प्रति हमेशा ही आशा से भरी है...यिर्म 29:11 क्योंकि अनन्त प्रेम से मैं तुम्हें प्रेम करता हूँ...यिर्म 31:3 मेरे विचार तुम्हारे प्रति समुद्र के बालू के समान अनगिनत हैं...भज 139:17–18 और मैं गीतों द्वारा तुम्हारे प्रति आनन्दित होता हूँ...सपन 3:17 और तुम्हारी भलाई करने में कभी मैं रुकूंगा नहीं...यिर्म 32:40 क्योंकि तुम मेरी बहुमूल्य संपत्ति हो...निर्ग 19:5 मैं अपने सारे हृदय और मन से तुम्हें स्थापित करना चाहता हूँ...यिर्म 32:41 और मैं तुम्हें महान और अद्भुत वस्तुएँ दिखाना चाहता हूँ...यिर्म 33:3 यदि तुम सम्पूर्ण हृदय से मुझे खोजोगे, तो अवश्य पाओगे...व्य 4:29 मुझमें आनन्दित हो और तब मैं तुम्हारे हृदय कि इच्छाओं को पूरा करूँगा...भज 37:4 क्योंकि मैंने ही उन सुइच्छाओं को तुम्हारे हृदय में रखा है...फिलि 2:13 मैं तुम्हारे लिये और बहुत कुछ कर सकता हूँ, हाँ इतना जिसकी तुम कल्पना भी नहीं कर सकते हो...इफ 3:20 क्योंकि मैं तुम्हारा सब से बड़ा प्रोत्साहक हूँ...2थिस 2:16–17 मैं वह पिता हूँ जो तुम्हें हर मुसीबत में सांत्वना देता हूँ...2कुर 1:3–4 जब तुम्हारा हृदय टूटा होता है तो मैं तुम्हारे निकट होता हूँ...भज 34:18 जैसे एक चरवाहा भेड़ को उठाकर ले चलता है उसी तरह मैंने तुम्हें अपने हृदय की निकटता में चलाया है...यश 40:11 एक दिन मैं तुम्हारी आँखो से हर आँसू पोछ दूँगा...प्रक 21:3–4 और मैं तुम्हारे हर दर्द को जो इस संसार में तुमने सहा है निकाल दूँगा...प्रक 21:4 मैं तुम्हारा पिता हूँ और मैं उसी तरह से तुमसे प्रेम करता हूँ जैसे मैं अपने पुत्र यीशु से करता हूँ...यूह 17:23 क्योंकि यीशु में मेरा प्रेम तुम पर प्रगट हुआ है...यूह 17:26 वह मेरे स्वरूप का सर्वसिद्ध प्रतिरूप है...इब्र 1:3 वह ये दिखाने आया कि मैं तुम्हारी तरफ हूँ, तुम्हारा विरोधी नहीं हूँ...रो 8:31 और तुम्हें बता सकूँ कि मैं तुम्हारे पापों का हिसाब नहीं लगा रहा हूँ...2कुर 5:18–19 यीशु इसलिए मरा कि तुम्हारा और मेरा मेल मिलाप हो सके...2कुर 5:18–19 उसकी मृत्यु तुम्हारे प्रति मेरे प्रेम की सब से बड़ी तस्वीर थी...1यूह 4:10 मैंने हर प्रिय वस्तु न्यौछावर कर दी ताकि तुम्हारे प्रेम को प्राप्त कर सकूँ...रो 8:32 यदि तुम मेरे पुत्र यीशु के दान को स्वीकार करते हो तो मुझे स्वीकार करते हो...1यूह 2:23 और फिर कुछ भी तुम्हें मेरे प्रेम से कभी अलग नहीं कर सकेगा...रो 8:38–39 घर वापस लौटो मैं तुम्हारे लिए स्वर्ग में एक अनुपम उत्सव मनाऊँगा...लूक 15:7 मैं हमेशा से पिता था और हमेशा पिता रहूँगा...इफ 3:14–15 मेरा सवाल यह है–क्या तुम मेरे बच्चे बनोगे?...यूह 1:12–13 मैं तुम्हारा इन्तज़ार कर रहा हूँ...लूक 15:11–32

...तुम्हारा प्रेमी पिता
सर्वशक्तिमान परमेश्वर

©FathersLoveLetter.com/Hindi